Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल।

पुराण विषयक राष्ट्रीय वेबीनार

शोधपत्र:**"मातृत्व का आदर्श, मदालसा"**

प्रा. श्रीमती हंसाबेन बी. गुजरिया

सरकारी विनयन कॉलेज,तलाजा

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और समाज में नारी अपने आदर्शों और आदर्श स्वरूप के कारण गौरवपूर्ण स्थान पर विराजमान है श्रुति ,स्मृति, इतिहास ,पुराण आदि साहित्य से लेकर वर्तमान काल तक नारी के विभिन्न रूप और हर रूप में उसके प्रदान तथा समर्पण की भूरी भूरी प्रशंसा प्राप्त होती है। एक और यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता कहते हुए उसका सम्मान और सामाजिक गौरवगान है। तो दूसरी ओर न ही स्त्री स्वातंत्र्यमरहती जैसी निंदनीय स्थिति का दर्शन भी होता है। वैराग्य मार्ग के प्रस्तोता ओने नारी नरक की खान कहते हुए नारी निंदा की है। तथा उसे वैराग्य में बाधा रूप माना है। किंतु जब हम पुराणों में दृष्टिपात करते हैं तो अद्भुत आनंददात्री, जीवनदात्री, मोक्षदात्री के रूप में; स्वयं अपेक्षा रहित अन्नपूर्णा के रूप में नारी नजर आती है। भारतीय संपूर्ण साहित्य में माता का गौरवशाली रूप प्रस्तुत होता है।

मार्कंडेय पुराण में अध्याय 21 से 36 तक प्राप्त मदालसा उपाख्यान में मदालसा के माध्यम से मातृत्व का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। मां केवल संतानों के शरीर का ही पोषण नहीं करती किंतु लोरी गा के उसके आत्मा का पोषण भी करती है। शारीरिक सामर्थ्य के साथ मोक्षमार्ग का सामर्थ्य भी प्रदान करती है। सामाजिक जीवन के विकास के साथ आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त करती है। मां इहलोक और अध्यात्म जगत की पहचान पालने में ही कराती है। यह है मातृत्व का आदर्श।

पुराणों में मां के लिए माता, जननी, शिवा, त्रिभुवन, म मेश्ठा, देवी, परम आराधनिया, दया, शांति, क्षमा,

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

धृति, स्वाहा, स्वधा, गौरी, पदमा, विजया, जया, सर्वदुखहा, निर्दोषा, दयार्द हृदया आदि नाम प्रयुक्त है। जो माता के कर्तव्यों और संतति के प्रति भावना के ही प्रतीक है। जो माता की संवेदनशील मूर्ति प्रस्तुत करते हैं।

वैष्णव शास्त्रों में कहा गया है कि पुत्र जनना उसी का सफल हुआ, जिसने पुत्र की मुक्ति हेतु उसे भक्ति और ज्ञान दिया। मदालसा त्रिकालदर्शी गंधर्वराज विश्वाबसु की, साहित्य, संगीत, कलादि के ज्ञान से युक्त, अध्यात्मज्ञान को आत्मसात करने वाली सुंदर कन्या थी। जिसका विवाह ब्रजकेतू दानव के पुत्र पातालकेतु का वध करने वाले कुमार ऋतूध्वज से हुआ था। प्रथम तीन पुत्रों विक्रांत, सुबाहु तथा अरीमर्दन या शत्रुमर्दन तीनों को पालने में झूलाते वक्त लोरिया गाते हुए ब्रह्मज्ञान की शिक्षा और दीक्षा दी थी। जो जगविख्यात है। उच्चतम और उत्तमकोटि का ब्रह्मज्ञान मदालसा की लोरियों में प्रकट होता है। और उसी के फलस्वरूप प्रथम तीनों पुत्रों में वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने मोक्ष मार्ग पर आत्मकल्याण हेतु प्रस्थान किया। मदालसा अपने चौथे पुत्र अलर्क को भी पालने में झूलाते हुए वहीं लोरिया सुनाती थी। तब पति ऋतुध्वज की कुलसमाप्ति की चिंता को मानते हुए ,अनासक्तभाव से अपने कर्तव्य का पालन करने हेतु पति की इच्छा का मान रखा। और अपने पुत्र को सांसारिक ज्ञान के लिए प्रवृत्ति मार्ग का उपदेश दिया। उसे धर्म, राजनीति, व्यवहार आदि अनेकानेक सांसारिक विषयों और आचरणों का ज्ञान दिया। मां मदालसा के ज्ञान से संपन्न पुत्र अलर्क शूरवीर ,पराक्रमी और महाप्रतापी राजा हुआ। मदालसा की प्रथम तीनों पुत्रों को ब्रह्म ज्ञान या आत्मज्ञान दिया जिसमें कहा है –

शुद्धोसी बुद्धोसी निरंजन ओसी संसार माया परिवर्जितोऽ सि।

संसार स्वप्नम त्यज मोहनिद्रा मदालसोल्लपमुवाचपुत्रम।।

और व्यवहार ज्ञान का उपदेश करते हुए सांसारिक विषयों में कहती है-

धन्योऽसि वसुधामशत्रु रेकशचिरम पालयितासि पुत्र।

तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो धर्मातफलम प्राप्स्यसि चामरत्वम ।।

अर्थात हे पुत्र तू धन्य है जो शत्रु रहित होते हुए अकेला ही दीर्घकाल तक इस अवनी पर उसका पालन

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

करता हुआ रहेगा। पृथ्वी के पालन से तुझे सुख और उपभोग की प्राप्ति होगी और धर्म के फलस्वरूप अमरत्व प्राप्त होगा। और आगे सुनाती है, हे पुत्र पर्वों के दिन ब्रह्मभोज करवा के ब्राह्मणों को तृप्त करना तथा अपने बंधु- बांधवो को उनकी इच्छा पूर्ति करते हुए प्रसन्न करना। ह्रदय में दूसरों की भलाई को धारण करना पराई स्त्रियों की ओर मन को कभी ना जाने देना, अपने मन में सदा भगवान विष्णु का ध्यान करना अंतःकरण में उनके ध्यान से काम, क्रोध आदि षडरिपुओ को जीतना, ज्ञान के द्वारा मायाका निवारण करना और जगत की अनित्यता का विचार करते रहना, धनप्राप्ति हेतु राजाओं पर विजय प्राप्त करना, यश के लिए धन का सदुपयोग करना, पराई निंदा सुनने से डरना तथा विपत्ति के महासागर में पड़े हुए लोगों को उधारना।

माता मदालसा के लोरी रूप में प्राप्त मात्र 12 श्लोकों में संपूर्ण ब्रह्म ज्ञान तथा व्यवहार ज्ञान का निचोड़ है। माता मदालसा द्वारा दिया गया उपदेश नैतिक जगत निर्माण में आज भी हमारे मार्गदर्शक बनने का सामर्थ्य रखता है। आज हम जानते हैं कि भौतिक उपलब्धियों के भरे इस विश्व में कोई भी असुविधा लंबी नहीं चलती किंतु भौतिक सुविधाओं से भरे विश्व में आज हम नैतिकमूल्यों का अकाल महसूस करते हैं।

मातृभूमि के लिए अथर्ववेद में उद्घोष किया है," माता भूमि पुत्रोंs म पृथिव्या:" की धरोहर रखने वाले भारतवर्ष में भी संस्कारों की कमी अखरती है। आज के विश्व में भौतिक उन्नति के चरमोत्कर्ष की चकाचौंध में अंधा बना विश्व बिना सोचे दौड़ा ही जा रहा है। इस युग में समाज के सुचारू संचालन में जिन मानवीय मूल्यों की जरूरत होती है ,उन मूल्यों को, मानवीयता को, नैतिकता को, बंधुत्व को, नारी सम्मान को सर्वथा भूल ही गया है। और हमारे सामने अन्याय, अत्याचार, स्त्रीसम्मान हनन, भ्रष्टाचार, दुराचार, बलात्कार आदि घटनाएं घटित होती प्रस्तुत हुआ करती है।

इन सभी त्रासदी से मुक्ति हेतु अपनी संतानों को मदालसा ने अपने पुत्र अलर्क को जो राजादिके वर्णाश्रमधर्म के साथ सदाचार आदि के वर्णन को देखना और समझना पड़ेगा। मदालसा का ब्रह्मज्ञान और

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

व्यवहारज्ञान निवृत्तिमार्ग और प्रवृत्तिमार्ग को प्रशस्त करता है। मदालसा ने अपनी संतानों को भक्ति और मुक्ति के साथ-साथ व्यवहार जगत में आदर्शों के साथ जीने का जो उपदेश दिया है, वह आज भी सांप्रत है।

मदालसा मातृत्व का पुराणों में प्राप्त भारतीय आदर्श है। जो न मात्र भारतीय माता-पिता का मार्गदर्शन करता है, किंतु समस्त संसार के माता-पिता के अपने संतानों के संदर्भित प्रश्नों का हल और मार्गदर्शन है।

इस प्रकार महाभारत जो कहता है-"माता गुरूतरा भूमि:" सर्वथा उचित है, क्योंकि माता ही संतानों के लिए सर्व से उत्तम गुरु, मार्गदर्शक और महानता का मापदंड है। इसीलिए भूमि से भी वह बड़ी है। गुजराती में कहा गया है "જે ક૨ જુલાવે પા૨ણું તે જગત પ૨ શાસન ક૨ે.". भारत में अपितु पूरे संसार में वीर, साहसी, मेधावी, पवित्र, आत्मज्ञानी एवं सर्वतोभावेन उन्नतिशील संतानों के सृजन हेतु नारी का मातृत्व का आदर्श मदालसा होनी चाहिए। आज फिर से वही आदर्श विश्वोद्धारक बनेगा।

संदर्भ ग्रंथ:

अथर्ववेद: सं. श्री राम शर्मा आचार्य, मथुरा

मारकंडेय पुराण: सं. श्रीराम शर्मा, आचार्य, मथुरा

मनुस्मृति: सुरेंद्रनाथ सक्सेना, मनोज पब्लिकेशंस दिल्ली,२०१९

महाभारत: गीता प्रेस गोरखपुर

पुराणों में भारतीय संस्कृति: पुरोहित , सोहन कृष्णा, जोधपुर २००७